विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 26 : अंक 33 : नई दिल्ली : 6-12 नवम्बर 2020

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण आदि चारित्रात्माएं हैदराबाद में स्थित 'महाश्रमण वाटिका' में सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। चतुर्मास की परिसम्पन्नता में एक मास से भी कम समय रह गया है। श्रद्धालुओं के आवागमन का क्रम क्रमशः बढता जा रहा है। रात्रि और प्रातःकाल अब हल्की ठंड रहने लगी है। पूज्यप्रवर चातुर्मास के पश्चात् अर्थात १ दिसम्बर को महाश्रमण वाटिका से प्रस्थान कर हैदराबाद शहर में पधारेंगे और कुछ दिनों तक शहर के उपनगरों में विहरण के उपरान्त रायपुर की ओर प्रस्थान करेंगे, ऐसी संभावना है।

स्मृतियां लॉकडाउन की

फौलादी संकल्पी चरणयुगल का हैदराबाद की ओर साहसिक प्रस्थान

१ जून। परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा बीएमआइटी बेलाटी से हैदराबाद के लिए प्रस्थान का निर्धारित दिन। यह यात्रा गुरुकुलवास की सामान्य रूप में होने वाली यात्राओं से भिन्न थी क्योंकि यह चार ग्रुप्स के रूप में की जा रही थी। यात्रा की इस विलक्षणता की पृष्ठभूमि में परिस्थिति भी विलक्षण थी। यह एक परिस्थिति है, जिससे दुनिया का अधिकांश भाग प्रभावित है। कोरोना महामारी का प्रभाव भारत में बढने लगा तो भारत सरकार ने २४ मार्च से लॉकडाउन कर लिया, किन्तु दूरद्रष्टा आचार्यप्रवर ने तो लॉकडाउन से पहले ही मानों स्वयं लॉकडाउन कर लिया। पूज्यप्रवर गत २१ मार्च से बीएमआईटी बेलाटी परिसर में प्रवासित थे और गत बहत्तर दिन से पूज्यप्रवर इस परिसर में स्थित अपने प्रवास स्थल (लिटिल हार्ट इंग्लिस मीडियम स्कूल) से एक बार भी बाहर नहीं पधारे।

भारत में कोरोना संक्रमितों की संख्या निरन्तर बढती जा रही है, किन्तु अर्थव्यवस्था और जनता की अनिवार्य आवश्यकताओं के मद्देनजर भारत सरकार द्वारा करीब ६९ दिन बाद लॉकडाउन से अनलॉक की दिशा में बढने की घोषणा की गई। आचार्यप्रवर ने मानों अनलॉक की प्रक्रिया प्रारंभ करने की घोषणा भी भारत सरकार की घोषणा से करीब १५ दिन पूर्व ही कर दी थी अर्थात आचार्यप्रवर ने गत १३ मई को ही १ जून २०२० को बीएमआइटी बेलाटी से प्रस्थान की घोषणा कर दी थी, जबकि भारत सरकार द्वारा अनलॉक की प्रक्रिया प्रारंभ करने की घोषणा ३० मई को की गई।

आचार्यप्रवर ने विहार की घोषणा भले ही कर दी थी, किन्तु कितने ही लोग इसकी सफलता के प्रति शंकित थे। प्रशासन की स्वीकृति कैसे मिलेगी? मार्गवर्ती गांवों में प्रवास के लिए स्थान कैसे मिलेगा? किसी अन्य क्षेत्र से आए अपने ही परिवार के सदस्य को लोग उसे कोरंटाइन किए बिना अपने घर में प्रवेश नहीं देना चाहते और वे प्रवेश दे भी दें तो मोहल्ले के अन्य लोगों का उन्हें विरोध झेलना पड़ता है, ऐसी परिस्थिति में एक साथ इतने बाहरी लोगों को अपने गांव में रुकते देख ग्रामीण लोग विरोध नहीं करेंगे क्या? मार्ग में दुर्भाग्यवश कोई कोरोना महामारी से संक्रमित हो गया तो उसके साथ ग्रुप के अन्य सदस्यों को भी कोरंटाइन नहीं होना पड़ेगा क्या? अथवा उस संक्रमित को वाहन से नहीं ले जाया जाएगा क्या? महाराष्ट्र में महामारी के महाप्रभाव को देखते हुए कई राज्यों ने महाराष्ट्र से अपने राज्य में प्रवेश प्रतिबंधित कर रखा है, ऐसे में कर्नाटक और तेलंगाना में प्रवेश कैसे हो पाएगा? आदि-आदि न जाने कितनी-कितनी शंकाएं, सवाल न केवल दूर स्थित साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं के मानस में थे, अपितु कई गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों के मन-मस्तिष्क में भी ऐसे ही कुछ सवाल उभर रहे थे।

इस यात्रा को पदयात्रा के रूप में न करने अथवा भिन्न सामाचारी में अन्य कहीं पधारने अथवा आगामी चतुर्मास हैदराबाद में न करने हेतु कितने-कितने निवेदन पत्र आदि के माध्यम से श्रीचरणों में प्रस्तुत किए जा चुके थे। आचार्यप्रवर ने प्रायः सबके निवेदनों को अवधानपूर्वक सुना/पढ़ा/जाना, किन्तु अवसर आने पर आत्मबल, मनोबल और साहसबल के साथ पदयात्रा का ही निर्णय लिया और उसके सभी गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों (आचार्यप्रवर के सिवाय ८५) को भी पदयात्रा के द्वारा ही हैदराबाद ले जाने का निर्णय किया। मानों इतिहास अपने आपको पुनः दोहरा रहा था। काठमांडो-नेपाल में भूकंप की विकराल त्रासदी के बाद भी भूस्खलन, पुनः भूकंप जैसे कई भयावह संभावित खतरों के बीच भी आचार्यप्रवर ने पदयात्रा का ही निर्णय किया था। उस समय भी चतुर्विध धर्मसंघ की ओर से पूज्यप्रवर को भिन्न सामाचारी में अन्य किसी सुरक्षित स्थान में पधारने हेतु कितने ही निवेदन किए गए थे, किन्तु पूज्यप्रवर ने अपने शौर्य, तपोबल और नेतृत्व कौशल से अपनी उस यात्रा को निर्विघ्न रूप में सुसंपन्न कर लिया। एक बार फिर भयावह परिस्थिति सामने थी, किन्तु फौलादी संकल्प के धनी महातपस्वी आचार्यप्रवर का संकल्पबल उसी तरह अडोल था। आज उस संकल्प की मानों परीक्षा का प्रथम दिन था। साधु-साध्वियां व श्रावक-श्राविकाएं पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित कर रहे थे।

गत सायंकाल साध्वियों ने आचार्यप्रवर की यात्रा के प्रति मंगलभावना स्वरूप एक गीत का संगान किया, वह इस प्रकार है-

पूज्य परमेश पधारो तेलंगाना, करणै जग रो उद्धार।
गुरुवर हो तारणहार, थांरो सबनै आधार।।

चमकै भैक्षवगण शासन एकादश आसन, दीपै देदीप्य दिदार।
घालां थुथकारो प्रभु री अनहद पुण्याई, बढ़ती चढ़ती दिन रात।।१।।

हैद्राबादी श्रद्धालू बाट निहारै, पूरो भक्तां री आश।
संतां! छतरी बण तणज्यो मारग रे मांही,
लागै ना आतप ताप प्रभु नै ना लागे ताप।।२।।

चालै धर्मध्वज प्रभु रै आगै-आगै, हरणै अघ जग संताप।
यात्रा सानन्द सफल हो मंगल उचरावां, वरज्यो आरोग्य अमाप।।३।।

लय : पियो नी परदेशी .....

आज प्रातः पश्चिम रात्रि में ग्रुप डी के संतों के द्वारा पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में मंगलभावों से युक्त एक गीत समर्पित किया गया, वह इस प्रकार है-

मंगलभावों से बोलें सभी, मंगलकारी हो यात्रा तुम्हारी।
विघ्न बाधा न आए कभी, मंगलकारी हो यात्रा हमारी।।

सुख-शांति से यात्रा चले, मन के सारे अरमान फले।
दृढ़ संकल्पी को मंजिल मिले, मंगलकारी हो यात्रा हमारी।।१।।

करुणा की तुम तस्वीर हो, लाखों-लाखों की तकदीर हो।
प्रभो! इस युग के महावीर हो, मंगलकारी हो यात्रा हमारी।।२।।

आगे-आगे प्रभु चलते रहें, पदचिन्हों पर हम बढते रहें।
नव-नव इतिहास गढते रहें, मंगलकारी हो यात्रा हमारी।।३।।

कोरोना का कोहासा मिटे, मानव मन की निराशा मिटे।
फिर से सब में नव आशा प्रकटे, मंगलकारी हो यात्रा हमारी।।४।।

युग-युग शासन पर शासन करो, भैक्षव गण का भंडार भरो।
प्रभु पग-पग पर विजय वरो, मंगलकारी हो यात्रा तुम्हारी।।५।।

लय : जिन्दगी प्यार का .....

ग्रुप डी के संतों के द्वारा उस गीत की प्रस्तुति के पश्चात ग्रुप ए के संतों ने ग्रुप डी के संतों के प्रति एक गीत के माध्यम से मंगलभावना की प्रस्तुति दी, वह इस प्रकार है-

डी ग्रुप रा संतां! रखज्यो चित्त समाध।
दो दो डी.जी साथ थांरे पहुंचों हैदराबाद।

सच करणै निज वचन नै रे, गुरुवर करे विहार।
दृढ़संकल्पी सामने रे, कुदरत मानै हार।।१।।

गुरुवर री सेवा मिली है, रहस्यां बणकर ढाल।
तुलसी महाप्रज्ञ सुरगां स्यूं, करे सदा संभाल।।२।।

मास्क लगाया नाक मुंह पर, सेनिटाइजर हाथ।
दो गज दूरी अति जरूरी, भूलण री के बात।।३।।

गुरुकुल रा साथी सुणो थे, म्हांरी आ मनुहार।
ऋषभादिक सब संत थांरे, भक्ति में तैयार।।४।।

लय : आपण भागां री .....

इस प्रकार मंगलभावना के आदान प्रदान के उपरान्त वातावरण में सरसता छाई हुई थी। आज प्रातः पांच बजे से ही सोलापुर जिला कलेक्टर श्री मिलिन्द शांभरकर के फोन कार्यकर्ताओं के पास आने लगे, वे पूज्यप्रवर के आसपास भीड़ न होने देने के लिए विशेष रूप से जागरूक थे। सोलापुर शहर पुलिस कमिश्नर श्री अंकुश शिंदे भी कार्यकर्ताओं के सम्पर्क में थे और वे अधीनस्थ अधिकारियों को निर्देशित भी कर रहे थे। जिला कलेक्टर के निर्देश पर स्थानीय तहसीलदार पूज्यप्रवर के प्रस्थान से पूर्व ही बीएमआइटी परिसर में पहुंच चुके थे। कई पुलिस अधिकारी अपनी टीम के साथ वहां उपस्थित थे।

सूर्योदय के उपरान्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंचीं। साध्वीप्रमुखाजी ने सम्पूर्ण धर्मसंघ की ओर से पूज्यप्रवर की यात्रा के प्रति मंगलकामनाएं अर्पित कीं। पूज्यप्रवर के निर्देश पर साध्वीप्रमुखाजी ने मंगलपाठ भी उच्चरित किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने करीब सात बजे प्रवास स्थल की इमारत से प्रस्थान किया। संत पूज्यप्रवर को पहुंचाने के लिए कुछ कदम साथ चले। हैदराबाद व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र भंडारी आदि कार्यकर्ता तथा अनेक श्रद्धालुजन मार्ग के दोनों ओर खड़े होकर पूज्यचरणों में मंगलभाव समर्पित कर रहे थे। प्रवास स्थल परिसर की सीमा में संतों व श्रद्धालुओं (पूज्यप्रवर की सेवा में रहने वालों के सिवाय) को रोक दिया गया। सामने साध्वियों का प्रवास स्थल था। साध्वीप्रमुखाजी आदि कुछ साध्वियां अपने परिसर की सीमा में खड़ी थीं। पूज्यप्रवर के निर्देश पर साध्वीप्रमुखाजी ने पुनः मंगलपाठ उच्चरित किया। पूज्यप्रवर उनके मंगलभावों को स्वीकार कर बीएमआइटी परिसर से बाहर पधारे। करीब ७३ दिनों के बाद अहिंसा यात्रा पुनः

गतिमान हुई। सरकार भी लॉकडाउन से अनलॉक की दिशा में आगे बढ़ रही थी, किन्तु राजमार्ग पर वाहनों का आवागमन बहुत ही कम था। पूज्यप्रवर की सेवा में मुख्यमुनिश्री सहित तीन संत तथा चार कार्यकर्ताओं के ही रहने की व्यवस्था की गई थी। पूज्यप्रवर व तीन संतों और चार कार्यकर्ताओं द्वारा भी सोश्यल डिस्टेंसिंग आदि प्रशासनिक व्यवस्थाओं का अनुपालन किया जा रहा था। सबके मुंह व नाक मास्क से ढके हुए थे। ग्रुप ए के शेष संतों ने कुछ-कुछ अन्तराल के उपरान्त विभिन्न ग्रुप्स में प्रस्थान किया।

स्थानीय पुलिस पूज्यप्रवर की सुरक्षा व्यवस्था हेतु मुस्तैद थी। वायरलैस पर पूज्यप्रवर के लोकेशन की पल-पल की खबर ली व दी जा रही थी और आगे से आगे पथ प्रशस्त किया जा रहा था। लॉकडाउन के दौरान व्यवस्थाओं के अनुपालन के लिए यत्र-तत्र पुलिस चौकियां स्थापित की गई थीं। उनमें कार्यरत पुलिसकर्मी पूज्यप्रवर के व्यक्तित्व, कर्तृत्व एवं मिशन से काफी परिचित हो चुके थे, इसलिए मार्ग के समीपस्थ पुलिस चौकियों में स्थित पुलिसकर्मी पूज्यप्रवर को वन्दन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। सोलापुर शहर में प्रवेश के साथ-साथ मार्ग के परिपार्श्वस्थ बस्तियों में लोगों की कुछ हलचल दिखाई दीं। करीब ढाई माह तक एकान्त प्रवास के बाद लोगों के बीच आकर अपने आप में कुछ अलग अहसास हो रहा था। स्थानीय जनता के मास्क से ढके हुए चेहरे उनकी सावधानी को दर्शा रहे थे। शहर के मध्यभाग में कुछ श्रद्धालुजन अपने-अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान, निवास स्थान आदि के समीप पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद ग्रहण कर रहे थे। यत्र-तत्र अन्य जैन समाज के कुछ लोग कतारबद्ध और करबद्ध भी खड़े थे। पूज्यप्रवर उन पर आशीषवृष्टि करते हुए अनवरत गतिमान थे।

सोलापुर में कोरोना महामारी के संक्रमितों की संख्या करीब ११०० पार पहुंच चुकी है और इस संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। पूज्यप्रवर के विहार पथ के निर्धारण में यह ध्यान रखा गया कि विहार पथ में कोरोना प्रभावित क्षेत्रों में जाना न हो अथवा उन्हें ज्यादा से ज्यादा टाला जाए। कहीं-कहीं 'कंटेनमेंट जोन' के बोर्ड लगे हुए दिखाई दे रहे थे, जो यह दर्शा रहे थे कि यह क्षेत्र कोरोना के अधिक प्रभाव के कारण प्रतिबंधित है। आज का विहार कुछ प्रलम्ब था और उसके साथ धूप भी अपना प्रभाव दिखा रही थी, किन्तु समत्वयोगी आचार्यप्रवर अस्खलित गति से गन्तव्य की ओर प्रवर्द्धमान थे।

करीब १४ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर सोलापुर के भवानीपेट में स्थित श्री पदमचंद सुराणा परिवार के निवास स्थान पर पधारे। आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में ग्रुप ए का आज का प्रवास यहीं रहा। शेष तीन ग्रुप आज बीएमआइटी, बेलाटी परिसर में ही प्रवासित हैं।

पूज्यप्रवर ने बीएमआइटी, बेलाटी में करीब ७२ दिन का प्रवास किया। इस दौरान कई लोगों ने अपने-अपने डेरे के साथ सेवा की। विषम परिस्थिति में जब काफी लोग भयभीत थे, उस समय कई श्रद्धालुजन पूज्यप्रवर और साधु-साध्वियों की सेवा में तल्लीन थे। इनमें से कुछ लोग तो मात्र कुछ दिन की मार्ग सेवा हेतु पहुंचें थे, किन्तु परिस्थितियां बदलीं और अन्य लोगों का आना संभव नहीं हुआ तो उन्होंने ढाई महीने से ज्यादा समय तक सेवा कर ली। बीएमआइटी प्रवास के दौरान (उससे पूर्व से भी) एक सप्ताह व उससे अधिक समय तक सेवा करने वाले डेरों के नाम इस प्रकार हैं-

१. भीखमचंद नखत, टमकोर-हैदराबाद	०२ फरवरी से ३१ मई
२. मूलचंद देवराज नाहर, जाणुन्दा-बैंगलुरु	०२ फरवरी से १५ मई
३. डागा परिवार, गंगाशहर-दिल्ली	१४ मार्च से ३१ मई
४. कचरुमलजी समदडिया, बीड	१६ मार्च से २८ मई
५. सविता पूनमचंद रुणवाल, कोल्हापुर	१८ मार्च से ०६ मई
६. उत्तमचंद पगारिया, कोल्हापुर	१४ अप्रेल से ०३ मई
७. महेन्द्रकुमार मरलेचा-बीड	०२ फरवरी से १४ अप्रेल

८. आचार्यश्री महाश्रमण अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति औरंगाबाद	०२ फरवरी से ०३ मई
९. आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, हैदराबाद	१४ मार्च से ३१ मई
१०.श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा	२९ मार्च से ३१ मई
११.अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद	०२ फरवरी से ३१ मई
१२.अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल	०२ फरवरी से ३१ मई
१३.तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम	०२ फरवरी से ३१ मई
१४.श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ आंचलिक सभा, पश्चिम महाराष्ट्र	०२ फरवरी से ०३ मई
१५.श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सोलापुर	०४ मई से ३१ मई
१६.श्रमणोपासक, हैदराबाद	१७ मई से ३१ मई

पूज्यप्रवर के हुबली से सोलापुर तक की यात्रा में एक सप्ताह व उससे अधिक समय तक मार्ग सेवा करने वाले अन्य डेरों के नाम इस प्रकार हैं-

१. विमल रुणवाल, जयसिंहपुर	०२ फरवरी से १९ मार्च
२. मामा-भाणेज, बेंगलुरु	४ फरवरी से २० मार्च
(मांगीलाल शांतिलाल छाजेड़, डूँगरमल इन्द्रचंद गादिया, सुरेश मोहन धारीवाल)	
३. अमरचंद सुमनबाई डागा, विराटनगर एवं उषा जैन, जगराओं	०२ फरवरी से ०५ मार्च
४. सतीश घोडावत, जयसिंहपुर	२९ जनवरी से २७ फरवरी
५. शंकरलाल सिंघवी, मुम्बई	०६ फरवरी से ०५ मार्च
६. जवाहरलाल भंसाली, इचलकंरजी	१८ फरवरी से ६ मार्च
७. श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सवदत्ती	०५ फरवरी से १२ फरवरी

आचार्यप्रवर के ७२ दिवसीय बीएमआइटी, बेलाटी में प्रवास के दौरान मुनि गौरवकुमारजी ने ११ की तपस्या की तथा श्री पुखराज डागा (गंगाशहर-दिल्ली) के सुपुत्र हर्ष ने ८ दिनों की तपस्या की। लॉकडाउन के दौरान सोलापुरवासियों ने भी निष्ठा के साथ सेवा का लाभ लिया। सोलापुरवासियों ने पूज्यप्रवर की सेवा में तल्लीन डेरों में अपेक्षित राशन और अन्य सामान की आपूर्ति में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

पूज्यप्रवर की यात्रा के सुख-संवाद देश-विदेश में स्थित श्रद्धालुओं को तथा उनके माध्यम से साधु-साध्वियों को मिलते रहे, इस दृष्टि से आज से सोश्यल मीडिया के माध्यम से तेरापंथ विज्ञप्ति प्रेषित करने का क्रम प्रारंभ किया गया।

पूज्य पदचिह्नों का अनुगमन करते हुए प्रस्थित हुआ ग्रुप बी

२ जून। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः सोलापुर से प्रस्थान किया। सोलापुरवासियों ने इससे पूर्व प्रवास स्थल में पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीष प्राप्त की। प्रवास स्थल से कुछ ही दूरी तय करने के उपरान्त पूज्यप्रवर राजमार्ग पर पधार गए। यहां पहुंचने का अर्थ था सोलापुर की सीमा से बाहर पहुंच जाना। पूज्यप्रवर के विहार के दौरान सोश्यल डिस्टेंसिंग आदि प्रशासनिक व्यवस्थाओं का पालन सजगतापूर्वक किया जा रहा था। सोलापुर जिला ग्रामीण पुलिस एस.पी.श्री मनोज पाटिल के निर्देशन में पुलिस पूज्यप्रवर की सेवा में सलंग्न थी। आसमान में छाए हुए बादल और ठंडी हवा के कारण वातावरण शीतलता धारण किए हुए था। पूज्यप्रवर करीब १५ कि.मी. का विहार कर बोरामनी में स्थित ग्लोबल विलेज पब्लिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं रहा। आज दोपहर के बाद बादलों की गड़गड़ाहट के साथ हल्की वर्षा प्रारंभ हुई, जो दिन-रात्रि में रुक-रुककर यदा-कदा होती रही।

आज ग्रुप बी के अन्तर्गत मुख्यनियोजिकाजी आदि २५ साध्वियां बीएमआइटी से प्रस्थान कर सोलापुर शहर में पहुंच गई। साध्वियों के विहार के दौरान भी सोलापुर पुलिस ने अपना दायित्व बखूबी निभाया। ग्रुप सी व ग्रुप डी के साधु-साध्वियां अब तक बीएमआइटी परिसर में ही प्रवासित हैं।

ओस्मानाबाद जिले में प्रवेश, ग्रुप सी का प्रस्थान

३ जून। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः बोरामनी से केरुड की ओर प्रस्थित हुए। गत कल से वर्षा के कभी होने और कभी रुकने का दौर जारी था। शीतल हवा व हल्की बारिश के कारण वातावरण सुरम्य रूप धारण किए हुए था। पूज्यप्रवर ने मार्ग में सोलापुर जिले की सीमा को अतिक्रांत कर ओस्मानाबाद जिले की सीमा में प्रवेश किया। इस अवसर पर सोलापुर जिला पुलिस ने विदा ली तो ओस्मानाबाद जिला पुलिस ने अपना दायित्व संभाल लिया। पूज्यप्रवर करीब १५ कि.मी. की यात्रा सम्पन्न कर केरुड में स्थित वैष्णोदेवी फूड प्रोडक्ट्स प्रा.लि. में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। आज भी वर्षा के कभी होने और कभी रुकने का क्रम जारी रहा।

आज महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि ग्रुप सी की २६ साध्वियों ने बीएमआइटी से प्रस्थान कर दिया, उनका आज का प्रवास सोलापुर शहर में रहा। ग्रुप बी व ग्रुप सी के विहार के दौरान भी साध्वियों की सेवा में पुलिस मुस्तैदी से तैनात रही।

ग्रुप डी के प्रस्थान के साथ सम्पन्न हुआ बीएमआइटी का सुदीर्घ प्रवास

४ जून। परम पूज्य आचार्यप्रवर आज प्रातः केरूर से नलदुर्ग की ओर प्रस्थित हुए। आसमान में छाए हुए बादल सूर्य के उर्ध्वारोहण के साथ छिन्न-भिन्न होते गए, किन्तु हवा के वेग के साथ नए-नए मेघसमूह सूर्य किरणों को बाधित भी करते गए। सूर्य और बादलों का यह संघर्ष प्रायः पूरे विहार के दौरान चलता रहा। कुछ वेग के साथ बहने वाली हवा तापमान को नियंत्रित बनाए हुए रही। विहार पथ का कुछ भाग आरोह-अवरोह लिए हुए था, किन्तु आचार्यप्रवर का समत्वभाव बाहरी परिस्थितियों से मुक्त रहा। पूज्यप्रवर करीब १३.३ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर नलदुर्ग में स्थित आर्ट एण्ड साइन्स कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

आज ग्रुप बी के सदस्य केरूर, ग्रुप सी के सदस्य बोरामनी और ग्रुप डी के सदस्य सोलापुर शहर में पहुंच गए। ग्रुप डी के प्रस्थान के साथ बीएमआइटी में अहिंसा यात्रा का सुदीर्घ प्रवास सुसम्पन्न हो गया। वह स्थान ऐतिहासिक दृष्टि से चिरस्मरणीय रहेगा। स्थानीय पुलिस विहार के दौरान चारों ग्रुप्स की सेवा में संलग्न रही।

५ जून। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः नलदुर्ग से भोसगा की ओर प्रस्थान किया। छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरे हुए विहार पथ का प्रारंभिक भाग कुछ आरोह-अवरोह युक्त था। नलदुर्ग के प्राचीन किले की लम्बी दीवार भी पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बनी।

आचार्यप्रवर करीब १५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर भोसगा में स्थित डॉ.के.डी. शेन्डगे इंग्लिश मिडियम स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हो रहा है। डॉ. सचिन शेन्डगे ने अपने विद्यालय में पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आज मध्याह्न में पूज्यप्रवर के मुखारविंद का लुंचन हुआ। अन्य तीन ग्रुप्स के सदस्य भी सानन्द सुखसातापूर्वक आज के अपने-अपने गंतव्य स्थल पर पहुंच गए।

अहिंसा यात्रा का सोलापुर जिले में प्रवास सुसम्पन्न

६ जून। परम पावन आचार्यप्रवर आज प्रातः भोसगा से उमरगा की ओर प्रस्थित हुए और चिलचिलाती धूप में करीब १६ कि.मी. का प्रलम्ब विहार कर उमरगा में स्थित श्री भाऊसाहेब बिराजदार स्मारक विद्यालय में पधारे। अन्य ग्रुप्स भी आज के अपने निर्धारित गन्तव्य पर पहुंच गए। आज डी ग्रुप के सदस्य भी सोलापुर जिले की सीमा को पार कर ओस्मानाबाद जिले में प्रविष्ट हो गए। इस प्रकार अहिंसा यात्रा का सोलापुर जिले में सुरक्षित प्रवास संपन्न हो गया।

सोलापुर में कोरोना के संक्रमितों की संख्या क्रमशः बढती हुए ११२५ से पार हो गई है, जबकि ओस्मानाबाद जिले में यह संख्या दो अंकों में ही सीमित है। गुरुकुलवासी सभी चारित्रात्माओं के सोलापुर जिले से प्रस्थान से श्रावक समाज निश्चिन्तता का अनुभव कर रहा है।

●●●

क्रमशः ...

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण हैदराबाद में

पाक्षिक संबोध : प्रकृति को सुन्दर बनाओ

१७ अक्टूबर। आज सूर्योदय के उपरान्त साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुईं। साध्वीवृन्द ने पूज्यप्रवर से पाक्षिक खमतखामणा किए। तदुपरान्त पूज्यप्रवर ने स्वरचित श्लोक

नाकृत्या पुरुषो नीचः, नाकृत्या पुरुषो महान्।
प्रकृत्या पुरुषो नीचः, प्रकृत्या पुरुषो महान्।।

के आधार पर पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा--'आकृति और प्रकृति दो चीजें हैं। एक है शरीर का सौष्ठव और दूसरा है स्वभाव। आकृति का अपना महत्त्व हो सकता है, किन्तु प्रकृति का मूल्य बहुत ज्यादा होता है। प्रकृति अच्छी होती है तो आकृति अच्छी हो अथवा उतनी अच्छी न भी हो तो भी काम चल सकता है, किन्तु प्रकृति खराब हो और केवल आकृति अच्छी हो तो निर्वाह कठिन हो सकता है। पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में विभिन्न प्रसंग भी फरमाए। आचार्यप्रवर ने 'नमन खमन अरु दीनता सबका आदरभाव' पद्य के आधार पर भी पावन पाथेय प्रदान किया। साध्वियां पूज्यप्रवर से पाक्षिक संबोध पाकर आह्लादित थीं।

नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का शुभारंभ

द्वितीय आश्विन शुक्ला एकम। नवरात्र का शुभारंभ। आज से परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का प्रारंभ हुआ। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत करीब ६.४० बजे से निर्धारित जप का प्रयोग कराया। उपस्थित जनता आचार्यप्रवर द्वारा करवाए गए जप का प्रयोग कर धन्यता की अनुभूति कर रही थी। आज रात्रि में आठ बजे से भी जप अनुष्ठान का उपक्रम रहा। पूज्यप्रवर ने उपस्थित श्रद्धालुओं को रात्रि के लिए निर्धारित जप का प्रयोग कराया। इस प्रकार नवरात्रि के संदर्भ में दोनों समय (प्रातः व रात्रि में) जप का प्रयोग प्रारंभ हो गया जो २५ अक्टूबर के प्रातः तक किया गया।

जयाचार्य द्वारा प्राप्त रत्नों को खोजें

१८ अक्टूबर। आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत पूज्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात रविवारीय उपक्रम रहा। इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्बोधन हुआ। परमाराध्य आचार्यप्रवर का 'आत्म चिन्तन और आगम मंथन' विषय पर विशेष प्रवचन हुआ।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'श्रीमज्ज्याचार्य फरमाते थे-'मघजी! आज तो उत्तराध्ययन में एक नया रत्न मिला है।' मुनि जिनेशजी भी बैठे हैं। इन्होंने श्रीमज्ज्याचार्य की यह घटना तो सुनी/पढी/बोली होगी कि मघजी! आज उत्तराध्यन में एक नया रत्न मिला है। यदि ये यह खोज कर बता सकें कि जयाचार्य को कौनसे रत्न मिले थे, कौनसे नए तत्त्व मिले थे। इतिहास पठन अथवा अनुश्रुति से कोई जानकारी मिले तो उसकी खोज करने का प्रयास करें, ताकि हम उन तत्त्वों से परिचित हो सकें, उनका उपयोग कर सकें।'

२० अक्टूबर। आज मध्याह्न में तेलंगाना पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन के चेयरमैन श्री दामोदार कोलेरी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति तथा मंगल मार्गदर्शन प्रदान किया। २१, २२ व २३ अक्टूबर को मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान पूज्यप्रवर द्वारा 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन का उपक्रम रहा।

ज्ञान विकास व संस्कार निर्माण का सुन्दर माध्यम है ज्ञानशाला

२४ अक्टूबर। आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के आगमाधारित मंगल प्रवचन के पश्चात हैदराबाद ज्ञानशाला द्वारा २५ बोल पर आधारित प्रस्तुति दी गई। पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'ज्ञानशाला बालपीढ़ी में ज्ञान विकास और संस्कार निर्माण का सुन्दर माध्यम है। ज्ञानशाला में जो ज्ञानार्थियों को धार्मिक प्रशिक्षण देते हैं, वे भी एक अच्छी सेवा करते हैं। ज्ञानशाला का अच्छा क्रम चलता रहे। ज्ञानार्थियों की संख्या जितनी बढ सके, उसके लिए समुचित प्रयास होता रहे।

२५ अक्टूबर। आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत पूज्यप्रवर के 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन के पश्चात रविवार के संदर्भ में विशेष उपक्रम रहा। परम पूज्य आचार्यप्रवर का 'संकल्प से सिद्धि तक की यात्रा' विषय पर विशेष प्रवचन हुआ। इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का भी उद्‌बोधन हुआ। कार्यक्रम में नवरात्रि के संदर्भ में जप अनुष्ठान का क्रम भी रहा। पूज्यप्रवर ने निर्धारित जप का प्रयोग कराया। इसी के साथ नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का क्रम सम्पन्न हो गया।

अद्वितीय है हैदराबाद चतुर्मास

२६ अक्टूबर। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर का 'ठाणं' आगमाधारित पावन प्रवचन हुआ। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'हैदराबाद में बढ़िया चतुर्मास हो रहा है, एक दृष्टि से तो अद्वितीय चतुर्मास हो रहा है। हैदराबाद के चतुर्मास की कुछ विशेषताएं मेरे दिमाग में आ जाती हैं। यह अपने ढंग का चतुर्मास हो रहा है। ऐसा चतुर्मास मैंने तो आज तक तो पहले कभी किया नहीं। चतुर्मास में भोजन बढ़िया की बात नहीं, भजन बढिया हो, काम बढ़िया हो, साधना बढ़िया हो, आत्मकल्याण-जनकल्याण का काम बढ़िया हो।'

पूर्व मुनि स्वस्तिककुमारजी की पुनः दीक्षा

आज कार्यक्रम में पूज्यप्रवर ने तेरापंथ धर्मसंघ के पूर्व मुनि स्वस्तिककुमारजी को पुनः मुनि दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) प्रदान की। आचार्यप्रवर ने इस क्रम को संपादित करते हुए दसवेआलियं के चौथे अध्ययन के सूत्र संख्या ११-१७ का पाठ किया। पूज्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'नई दीक्षा होने से वर्तमान में दीक्षा पर्याय में सबसे छोटा होना होता है, परन्तु छोटा क्या है, कुछ संतों से छोटा और मानों अनन्त जीवों में बड़ा होने का पुनः मौका मिला है। जीवन में कभी-कभी स्थितियां आ सकती हैं। इन्होंने बहुत अच्छा कार्य किया कि वापस आ गए। ऐसा करना इनके लिए उचित भी था। पहले भी अच्छा विहरण करते थे, अच्छा कार्य करते थे। आज पुनः छेदोपस्थापनीय चारित्र में आ गए। मैं एक बात कहना चाहता हूं--'मुनि स्वस्तिककुमारजी अग्रणी की वन्दना करें। मुनि सुपार्श्व को दूर से ही पुनः मुनि स्वस्तिककुमारजी का सहवर्ती नियुक्त किया जा रहा है। यथासंभव, यथावसर, यथानुकूलता मुनि स्वस्तिककुमारजी और मुनि सुपार्श्व का मिलन कराया जा सकेगा।

सद्यः पुनः दीक्षित मुनि स्वस्तिककुमारजी ने अपने कृतज्ञ भावों को अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'हैदराबाद में आज विजयादशमी के दिन एक मुमुक्षु ने विजय यात्रा का वरण किया। व्यक्ति साधना के पथ पर चलता है। कभी-कभी मन विचलित भी हो सकता है, ऐसी स्थिति में पुनः संभलना अच्छी बात होती है। इस दृष्टि से आज का दिन मुनि स्वस्तिककुमारजी के लिए नए जागरण का दिन है, विजयादशमी है तो विजय यात्रा का दिन है। अपने कषायों, अपने मन और अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के लिए नया प्रस्थान करना है। अध्यात्म के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग करके आगे बढ़ना है और सबसे महत्त्वपूर्ण है अपने लक्ष्य, धर्मसंघ और गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित होकर अपनी साधना को आगे बढाना है, क्योंकि समर्पण से जो कुछ मिलता है, वह अपने चिन्तन से नहीं मिल सकता।

जो साधक अपने संघ के प्रति, अपने गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित हो जाते हैं, अपना जीवन उनके चरणों में समर्पित कर उनकी दृष्टि की आराधना करते हैं, उनके हर निर्देश के प्रति जागरूक रहते हैं, उन्हें गुरु अपने आप ही उस स्थान पर पहुंचा देते हैं, जहां पहुंचने की वे कल्पना भी नहीं कर सकते है।

अभी हम सभी लोगों ने देखा कि परम पूज्य गुरुदेव ने मुनि स्वस्तिककुमारजी को छेदोपस्थापनीय चारित्र प्राप्त करवाकर उन्हें तत्काल अग्रणी बनने की वन्दना कराई। उनकी यह मांग होती कि मुझे अग्रणी बनाओ तो मैं संघ में आऊं तो शायद यह संभव न होता। इन्होंने अपना समर्पण किया तो परम पूज्य गुरुदेव ने स्वयं कृपा करवाई। मैं मुनि स्वस्तिककुमारजी के प्रति यही मंगलकामना कर रही हूं कि वे अपनी संयम साधना के प्रति

सतत जागरूक रहें। उन्हें खोया हुआ संयम रत्न पुनः प्राप्त हुआ है, इसे सावधानी से सहेज कर रखना है, जागरूक रहना है। संघ व गुरु के प्रति समर्पित रहना है। गुरु का हर निर्देश आपके पथ को प्रशस्त करता रहे। यही मंगलकामना।'

कार्यक्रम में मुनि जिनेशकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। २७, २८, २९ व ३० अक्टूबर को मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत पूज्यप्रवर के 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन हुए।

शरच्चन्द्रसमश्वेत बनें

३१ अक्टूबर। द्वितीय आश्विन पूर्णिमा। शरद पूर्णिमा। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'नमस्कार महामंत्र के गीत में अर्हत् का उल्लेखन करते हुए कहा गया है--'शरच्चन्द्र समश्वेत।' अर्हत् की स्तुति में अर्हत् को शरच्चन्द्र समश्वेत बताया गया है। शरद पूर्णिमा का चन्द्रमा, आश्विन पूर्णिमा अपने आप में एक विशेष रात्रि होती है। सामान्य आदमी भी अपने जीवन में शरद पूर्णिमा जैसी श्वेतता पाने की दिशा में आगे बढने का प्रयत्न करे तो वह आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ सकता है।

शरच्चन्द्र समश्वेत बनने के लिए अनेक बातें हो सकती हैं, मैं चार बातें बता रहा हूं--

१. क्षांति-आदमी को सहन करने का अभ्यास करना चाहिए। सहिष्णुता का विकास करना चाहिए। सहन करने के लिए अपेक्षित है कि आदमी का गुस्सा शांत रहे। कोई बात मन के प्रतिकूल भी हो सकती है, उस स्थिति में भी सहिष्णुता और धैर्य का अभ्यास करना चाहिए। बात-बात में गुस्सा करेंगे तो स्वयं का नुकसान हो सकता है। मुझे लगता है कि गुस्सा सामान्यतया लगभग तो किसी के काम का नहीं होता। गुस्से से तो नुकसान की बहुत संभावना रहती है। आदमी के सामने कुछ प्रतिकूल स्थिति आती है, अहंकार पर चोट लगती है तो गुस्से को उभरने का अवकाश मिल जाता है। अवकाश मिलने पर भी गुस्सा न आए, यह विशेष बात होती है, क्योंकि आदमी के जीवन में प्रतिकूलता को सहने का भी अभ्यास होना चाहिए, समता होनी चाहिए। कठिनाइयों से घबराना आदमी का दौर्बल्य होता है। आदमी को कठिनाई से डरना नहीं चाहिए। साधु को तो क्षमा का भाव रखना ही चाहिए, गृहस्थों के लिए भी सहिष्णुता अपेक्षित होती है। कभी-कभी बड़े व्यक्तियों को भी सहन करना चाहिए। शासन-प्रशासन में रहने वालों को तो प्रतिकूलताओं को सहने की दृष्टि से भी ज्यादा क्षमतावान बनना चाहिए। सहिष्णुता हो तो शरद चन्द्र के समान श्वेत बनने का एक उपाय आत्मगत हो सकता है।

सहिष्णुता शारीरिक भी होती है और मानसिक व वैचारिक भी होती है। सर्दी-गर्मी आदि प्रतिकूल परिस्थितियों को सहना शारीरिक सहिष्णुता होती है। कठिनाई का सामना किया जाए तो वह कठिनाई स्वतः समाप्त हो सकती है। यदि उससे डरेंगे तो वह और अधिक हावी हो सकती है। व्यक्ति में थोड़ा कठोरता का जीवन जीने का यथोचित अभ्यास रखना चाहिए। कई गृहस्थों को कमरे, कार आदि में भी ए.सी. चाहिए। ऐसी स्थिति में दो घंटा बिजली चली जाए तो कठिनाई हो सकती है। हमारे संत दिन-रात में बिना ए.सी. रह जाते हैं, सो जाते हैं। यह अभ्यास, लक्ष्य और चिन्तन की बात है।

मन के प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होने पर भी समता और शांति में रहना मानसिक सहिष्णुता होती है। आदमी को मन के प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होने पर भी अधीर नहीं होना चाहिए।

अपने विचार के प्रतिकूल विचार को जानकार भी अपनी सहिष्णुता को नहीं खोना चाहिए। किसी के विचार से सहमत होना अथवा न होना अलग बात है, किन्तु किसी के हमसे भिन्न विचारों को लेकर गुस्सा क्यों करना चाहिए, अधीर क्यों बनना चाहिए। चर्चा, तर्क, बहस की जा सकती है, किन्तु वैचारिक भिन्नता के कारण गुस्सा नहीं करना चाहिए, शांति रखनी चाहिए। अपने से भिन्न विचारों को भी सहन करना वैचारिक सहिष्णुता है। इस प्रकार हम सहिष्णुता से शरच्चन्द्र के समान श्वेत बनने की दिशा में आगे बढ सकते हैं।

२. मार्दव भाव-आदमी अहंकार न करे। गृहस्थ के पास पैसा हो सकता है, पद हो सकता है, संतों के पास आगम आदि का ज्ञान हो सकता है, किन्तु पैसे, पद, ज्ञान आदि का अहंकार नहीं करना चाहिए। निरहंकारता की साधना आगे बढती है तो आदमी शरच्चन्द्र समश्वेत बनने की दिशा में आगे बढ सकता है।

३. आर्जव भाव- आदमी में ऋजुता, सरलता रहनी चाहिए। छल, कपट से आत्मा मलिन बनती है, अश्वेत बनती है और ऋजुता से आत्मा निर्मल रहती है, दूसरे को ठगने, धोखा देने जैसी क्षमता, बुद्धिमत्ता होने पर भी नहीं ठगना अच्छी बात होती है। चातुरी, बुद्धिमत्ता का होना एक बात है, पर उसका उपयोग किसी को धोखा देने में न हो, किसी की समस्या के कल्याणकारी समाधान में हो। ऋजुता रहे तो आदमी शरच्चन्द्र समश्वेत बनने की दिशा में आगे बढने में सफल हो सकते हैं।

४. संतोष-अतिलोभ नहीं होना चाहिए। दो शब्द हैं-वृत्त और वित्त। वृत्त यानी धन और वित्त यानी चारित्र। चारित्र की प्रयत्नपूर्वक सुरक्षा करनी चाहिए। वित्त के लिए वृत्त का बलिदान नहीं करना चाहिए। जीवन को चलाने के लिए आदमी को जितना चाहिए, उतने के लिए तो उसे प्रयत्न करना आवश्यक हो सकता है, किन्तु उसे अतिलोभ से बचना चाहिए, संतोष रखना चाहिए, असंग्रह की भावना रखनी चाहिए। संतोष का भाव है तो आदमी शरच्चन्द्र समश्वेत बनने की दिशा में आगे बढ सकता है।

इस प्रकार क्षांति, मार्दव, आर्जव और संतोष के द्वारा शरच्चन्द्र समश्वेत बनने की दिशा में आगे बढने में सफलता अर्जित की जा सकती है।

एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स कॉन्फ्रेन्स एवं बारहव्रत श्रावक सम्मेलन

आज परमपूज्य आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत दो अन्य उपक्रम समायोजित हुए-तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में द्विदिवसीय एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स कॉन्फ्रेन्स का शुभारंभ तथा तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद के तत्वावधान में बारहव्रत श्रावक सम्मेलन का आयोजन। पूज्यप्रवर ने बारहव्रत ग्रहण करने के इच्छुक श्रावक-श्राविकाओं को बारहव्रतों का स्वीकरण करवाया। चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र भंडारी ने दोनों उपक्रमों के संदर्भ में अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अन्तर्गत ऑर्गानाइजेशन डवलपमेन्ट के चेयरमेन श्री नवीन सुराणा, आइ.पी.एस.श्री राहुल जैन तथा कॉन्फ्रेन्स के संयोजक श्री विजय कोठारी (आइएएस) ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री राहुल श्यामसुखा और बारहव्रत श्रावक सम्मेलन के संयोजक श्री विनोद दूगड़ ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में शरद पूर्णिमा, बारहव्रत श्रावक सम्मेलन और एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स कॉन्फ्रेन्स के संदर्भ में उद्गार व्यक्त किए।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'आत्मकल्याण की दृष्टि से व्रती बनना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। व्रत विशेष के बिना सामान्य श्रावक के रूप में रहना एक सामान्य बात है, परन्तु समझपूर्वक बारहव्रतों को ग्रहण कर लेना और उनका जागरूकतापूर्वक पालन करना बड़ी महत्त्वपूर्ण बात होती है। व्रत से एक कवच तैयार हो जाता है। जैसे एक व्यक्ति शराब नहीं पीता है, उसके साथ उसके शराब पीने का त्याग भी है, व्रत है तो वह और ज्यादा मजबूती की बात हो सकती है। अव्रत आश्रव को रोकने के लिए व्रत को स्वीकार करना उपयोगी होता है। जिन लोगों ने बारहव्रतों को स्वीकार किया है, वे अपने व्रतों के पालन के प्रति जागरूकता रखें। अपने लिखे हुए, स्वीकार किए हुए नियमों को यदा-कदा पढते भी रहें, ताकि उनकी स्मृति रहे और व्रतों का अच्छा पालन भी हो सके। तेरापंथ युवक परिषद ऐसे कार्यों में खूब अच्छा आयास-प्रयास करती रहे। युवक भी जितना हो सके, व्रतों के स्वीकरण की दिशा में आगे बढने का प्रयास करें।

एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर्स कॉन्फ्रेन्स भी आयोजित हो रही है। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अनेक आयाम हैं, उनमें एक यह भी है। सेवा अनेक रूपों में हो सकती है। प्रशासन के रूप में सेवा देना एक योग्यता सापेक्ष कार्य होता है। यों तो हर कार्य में योग्यता आवश्यक होती है, परन्तु प्रशासन के लिए एक ऐसी योग्यता चाहिए, जिसमें बौद्धिकता भी हो और आदमी का मस्तिष्क भी संतुलित रह सके। शासन, प्रशासन और अनुशासन-ये तीन शब्द हैं। अनुशासन के बिना शासन-प्रशासन निष्प्राण-सा हो सकता है। दूसरों पर अनुशासन करना महत्त्वपूर्ण होता है, पर उसकी पृष्ठभूमि में स्वानुशासन रहना चाहिए। स्वानुशासन विहीन परानुशासन कुछ निराधार-सा हो सकता है। दूसरों पर अनुशासन करने का एक बड़ा आधार होता है-स्वानुशासन। स्वानुशासन के बिना दूसरों पर अनुशासन कुछ कमजोर भी पड़ सकता है और लोग उसकी बातों को कितना, क्या मानेंगे, यह प्रश्न भी हो सकता है।

गृहस्थ शासक में एक सीमा तक इन्द्रिय विजय की भी साधना होनी चाहिए। एक सीमा तक इन्द्रियजय की साधना होती है, प्रशासक शासन करने में अच्छा सफल हो सकता है। जो प्रशासन के पेशे से जुड़े हुए हैं, वे यह ध्यान दें कि उस पेशे में नैतिकता कितनी है। प्रशासन के क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्ति के सामने वित्त का प्रलोभन आ सकता है, परन्तु वृत्त की शक्ति इतनी तेज हो कि वित्त का प्रलोभन भी सफल न हो सके। प्रशासन वित्त के प्रलोभन को फैल करने में सफल रहे, यह भी प्रशासन की निर्मलता का एक बड़ा अंग होता है। जहां वित्त हावी हो जाता है और वृत्त कमजोर पड़ जाता है, वहां प्रशासन का कार्य भी कमजोर पड़ सकता है। प्रशासकीय कार्य में नैतिकता की शक्ति का होना अपने चरित्र की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है और कार्य की निर्मलता की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

प्रशासन के कार्य में कई बार दिमाग में तनाव ला सकने वाली स्थितियां आ सकती हैं, ऐसी स्थितियों में भी विशेष तनाव का न होना प्रशासन का कौशल होता है। यह कौशल प्रशासन के क्षेत्र में कार्य करने वालों में रहना चाहिए। स्थितियां समस्याएं आ सकती हैं, किन्तु मस्तिष्क में भार न रहे। रात में सोते समय नींद अच्छी आ रही है तो मानना चाहिए कि तनावमुक्तता की स्थिति है। समस्याओं आदि के तनाव के कारण रात्रि में नींद का न आना अच्छा नहीं होता।

प्रशासन के कार्य से जुड़े हुए व्यक्ति को आवेश से बचने का प्रयास करना चाहिए। सामने वाला व्यक्ति व्यर्थ बातें भी कर सकता है, ऐसे समय में शांति में रहने का प्रयास करना चाहिए, गुस्सा नहीं करना चाहिए। आवेश का न आना प्रशासनिक सफलता का एक आयाम है। प्रशासन के कार्य में लगा हुआ व्यक्ति वित्त के प्रलोभन को अपने पर हावी न होने दे, तनावमुक्त रहे और आवेश न करे तो वह एक सफल प्रशासक बन सकता है। इस प्रकार प्रशासन की सफलता का मुख्य आधार है-स्वशासन। नैतिकता, तनावमुक्तता और अनावेश स्वशासन के ही अंग हैं। स्वशासन की स्थिति में प्रशासन भी अच्छा हो सकता है।

जैन धर्म तेरापंथ से जुड़े हुए प्रशासनिक लोगों के व्यक्तिगत जीवन में धार्मिकता रहे। नमस्कार महामंत्र का प्रतिदिन जप करने का क्रम रहे और समय मिल जाए तो सप्ताह में कम से कम एक सामायिक भी हो। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ से जुड़े हुए लोग शनिवार की सायं सात से आठ के बीच सामायिक करें तो और भी अच्छी बात हो सकती है। सामायिक से आत्मा की ओर जाने का मौका मिल सकता है, अनायास सांसारिक कार्यों से विश्राम भी मिल सकता है। जैन तेरापंथी प्रशासनिक लोगों में नशामुक्तता भी रहे। किसी के भी साथ बैठना हो, रहना हो तो भी ड्रिंकिंग न हो। अच्छा धार्मिक, आध्यात्मिक कार्य हो। कॉन्फ्रेन्स में अच्छा चिन्तन-मंथन हो। शुभाशंसा।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

●●●

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने आज तेरापंथ धर्मसंघ के लिए आध्यात्मिक संपोषण-१५ के रूप में अपना मंगल संदेश प्रदान किया, जो इस प्रकार है-

आध्यात्मिक संपोषण-१५ ३१ अक्टूबर २०२०

संदर्भ : कोरोना वायरस

१. सभी चारित्रात्माएं, समणश्रेणी सदस्य, संघीय संस्था सदस्य और अन्य श्रावक-श्राविकाएं समता और अभय का भाव रखने का प्रयास रखें, सोश्यल डिस्टेंसिंग आदि के रूप में समुचित सावधानी भी रखें।
२. वर्तमान समस्या के संदर्भ में सरकार और प्रशासन के द्वारा निर्दिष्ट व्यवस्था के प्रति समुचित सजगता रखनी चाहिए।
३. प्रतिदिन रात्रि १२ बजे से दिन के १२ बजे के बीच 'चइत्ता भारहं वासं' श्लोक का कम से कम २१ बार यथासंभव पाठ किया जाना चाहिए।
४. साधु-साध्वियां व समणश्रेणी सदस्य गोचरी आदि किसी प्रायोजन से अपने प्रवास स्थल परिसर से बाहर हों, तब यथासंभव मास्क अथवा अन्य कुछ आवरण अपने मुख व नासिका पर यथानुकूलता लगाए रखें।
५. आध्यात्मिक संपोषण-३ (धारा ४ से ७) में उल्लिखित गोचरी विषयक सुविधाओं का आवश्यकतानुसार उपयोग करना अनापत्तिपूर्ण है।
६. यथासंभव गृहस्थ चारित्रात्माओं के चरणस्पर्श न करें।
७. यदि चारित्रात्माओं/समणियों को उचित लगे और स्थानीय तेरापंथी सभा आदि दायित्वशील संस्था की सहमति हो तथा प्रशासन के नियमों का अतिक्रमण न होता हो तो चारित्रात्माओं/समणियों का अब आवश्यकतानुसार प्रवचन कार्यक्रम हो सकता है। परन्तु कोविड-१९ से संबंधित सरकारी निर्देशों का अतिक्रमण नहीं होना चाहिए।
८. यह संदेश तेरापंथी सभाओं के पास पहुंच जाए तो वे अपने क्षेत्र में व अपने क्षेत्र के आसपास प्रवासित चारित्रात्माओं व समणश्रेणी सदस्यों को इससे अवगत करा सकती हैं।

नोट - धारा ३ से ७ १-३० नवम्बर २०२० तक के लिए निर्दिष्ट की जा रही हैं।

महाश्रमण वाटिका, शमशाबाद, हैदराबाद **आचार्य महाश्रमण**

सुधार कर पढें-

वर्ष २६ अंक २९ के पृष्ठ २ की प्रथम पंक्ति इस प्रकार पढी जाए भगवान ऋषभ ने जो तपस्या की या हो गई, वह तो वर्तमान में हो पानी मुश्किल है।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक-संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी., ६३, जी.एफ., पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला